Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2022, VOL- 9/69
doi.org/10.21922/srjis.v9i69.10034

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट प्रकल्प के संदर्भ में आर्थिक स्वावलंबन का आधार

अंकित कुमार पांडेय
पी-एच. डी. शोधार्थी, (समाज कार्य), म. गां. अं. हि. वि. वर्धा- महाराष्ट्र
ई-मेल : ankitpandey88023@gmail.com

Paper Received On: 21 FEB 2022
Peer Reviewed On: 28 FEB 2022
Published On: 1 MAR 2022

Abstract

नानाजी देखमुख एक प्रमुख समाज सुधारक एवं राजनेता रहे हैं, जिन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की तथा इस संस्थान के माध्यम से उन्होंने गाँव के विकास हेतु निष्काम भाव से कार्य किया। नानाजी ने ग्रामीण विकास के लिए चार सूत्र - शिक्षा, सदाचार, स्वावलंबन एवं स्वास्थ्य को प्रमुख माना है। प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित, सदाचारी, स्वावलंबी व स्वस्थ्य हो, इन्हीं उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की। यह संस्थान दीनदयाल जी के 'एकात्म मानव दर्शन' और गाँधी जी के 'ग्राम-स्वराज्य' के विचारों से साम्यता रखकर सतत ग्रामीण विकास हेतु कार्य कर रहा है। जिसकी सबसे बड़ी और महत्वकांक्षी परियोजना चित्रकूट प्रकल्प है। चित्रकूट एक धार्मिक क्षेत्र है जो मध्य-प्रदेश के सतना जनपद एवं उत्तर-प्रदेश के चित्रकूट जनपद के मध्य फैला है। संस्थान चित्रकूट परिधि के ग्रामीण अंचल में अनेक प्रकार के शैक्षणिक, रोजगारपरक, स्वास्थ्य एवं आचार-व्यवहार से संबंधित अनेक कार्य कर रहा है। संस्थान ने ग्रामीण अंचलों में अनेक स्कूल, अस्पताल व रोजगारपरक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की है। किसानों को उनकी कृषि संबंधी समस्याओं का निवारण तथा उन्नत खाद, बीज एवं उन्नत नस्ल के दुधारू पशुओं से संबंधित अनेक आवश्यक जानकारी कृषि केंद्रों पर दी जाती है। इस प्रकार शिक्षा, स्वावलंबन, सदाचार एवं स्वास्थ्य पर कार्य करते हुए संस्थान ने ग्रामीण विकास का मॉडल प्रस्तुत किया है। उक्त शोध पत्र में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आर्थिक स्वावलंबन हेतु किए गए कार्यों की जो स्थिति चित्रकूट प्रकल्प के अंतर्गत प्राप्त हुई है उसके महत्त्व को प्रस्तुत किया गया है। अतः संदर्भित शोध का उद्देश्य दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर लाभार्थियों के आर्थिक स्वावलंबन के स्तर का अध्ययन करना है। इसीलिए संदर्भित अध्ययन में वर्णात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग मूल्यांकनात्मक अध्ययन दृष्टि से किया गया है। जिसके अंतर्गत शोध प्रविधि प्राथमिक स्त्रोतों पर आधारित है। इस तरह से प्रस्तुत शोध पत्र में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट प्रकल्प में आर्थिक रूप से स्वावलंबी एवं सशक्त बनाने हेतु किए गए कार्यों की स्थिति को जाँचा गया है।

प्रमुख संप्रत्यय *: ग्रामीण विकास, स्वावलंबन, आर्थिक स्वावलंबन, दीनदयाल शोध संस्थान*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना

स्वावलंबन की प्रक्रिया व्यक्ति अथवा समाज के स्वयं के संसाधन एवं योग्यता से प्रारंभ हो कर व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आयाम जब व्यक्ति के द्वारा स्वयं के स्तर पर क्रियान्वित किए जाते है तो वह व्यक्ति की आत्मनिर्भर की स्थिति होती है, इसमें बाहरी कारक व्यक्ति को प्रभावित नहीं करता है। सशक्तिकरण जहाँ समाज या पर्यावरण से उन्मुख होता है वहीं स्वावलंबन व्यक्ति से समाज की तरफ उन्मुख होता है। सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन एक ही सूत्र के दो पहलू है सामाजिक सशक्तिकरण के द्वारा व्यक्ति स्वावलंबी होता है। वहीं स्वावलंबन के द्वारा सशक्त होता है। उदाहरण के तौर पर निर्धन बालक सरकारी शोध वृत्ति पर शिक्षा दीक्षा प्राप्त करता है तो इसका शैक्षिक रूप से सामाजिक सशक्तिकरण कहलाएगा। जो कालांतर में अपनी शिक्षा के आधार पर नौकरी पेशा अपनाता है और आर्थिक रूप से स्वावलंबन को प्राप्त होता है। संदर्भित अध्ययन में नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान के चित्रकूट प्रकल्प के अंतर्गत आर्थिक स्वावलंबन हेतु किए गए प्रयासों का सारगर्भित अध्ययन विदित है।

उद्देश्य

- दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर लाभार्थियों के आर्थिक स्वावलंबन के स्तर का अध्ययन करना है।

शोध प्रश्न

- दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर लाभार्थियों के आर्थिक स्वावलंबन का स्तर क्या है?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट प्रकल्प के अलोक में आर्थिक स्वावलंबन संबंधी किए गए कार्यों के अधययन से संबंधित है। इसीलिए संदर्भित अध्ययन में वर्णात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग मूल्यांकनात्मक अध्ययन दृष्टि से जाँच परख करने हेतु किया गया है। जिसके अंतर्गत शोध प्रविधि प्राथमिक स्त्रोतों पर आधारित है। जिसके अंतर्भूत आर्थिक स्वावलंबन के विविध उप चरों की पहचान कर उनके गहन अध्ययन पर केंद्रित है। अध्ययन में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों के आर्थिक स्वावलंबन के बारे में चर्चा की गई है और आर्थिक स्वावलंबन संबंधित कार्यों की उपयोगिता क्या है यह भी तलाशा गया है, ताकि गहन अध्ययन किया जा सके।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आर्थिक स्वावलंबन का सैद्धांतिक संदर्भ

आर्थिक स्वावलंबन की स्थिति में उत्पादन, उपभोग एवं वितरण के पक्ष को सम्मिलित किया जाता है। व्यक्ति या समाज अपनी आर्थिक गतिविधियों पर स्वतंत्र रूप में कितना क्रियान्वित करता है और उसका यह क्रियान्वयन वित्तीय पूँजी को पर्याप्त हासिल करने में मदद करता है तो यह आर्थिक स्वावलंबन कहलाएगा। किसी वस्तु के उत्पाद में व्यक्ति अथवा संस्था का आर्थिक स्वावलंबन से तात्पर्य यह भी है कि वह बगैर किसी बाहरी अनुकम्पा अथवा अनुदान के करने में सक्षम है। आर्थिक स्वावलंबन की यह प्रक्रिया व्यक्ति को स्वेच्छा के अनुसार व्यवसाय करने व्यापारिक संबंध रखने की संभावना प्रदान करता है। उदाहरण के तौर पर देखें तो जो व्यक्ति या देश आर्थिक रूप से स्वावलंबन को प्राप्त किए होते हैं, वह अपना आर्थिक संबंध दुनिया में व्यक्ति अथवा देशों से स्वतंत्र रूप से बनाते हैं। वहीं जो लोग आर्थिक स्वावलंबन को प्राप्त नहीं किए हुए होते उन्हें किसी खास व्यक्ति अथवा कर्ज के नीचे दबे होने के कारण शिकार होना पड़ता है। इस तरह से देखा जाए तो आर्थिक स्वावलंबन का संबंध जीवन के सामाजिक, राजनैतिक जैसे अन्य पक्षों को भी प्रभावित करता है। जैसे-जैसे आज के आर्थिक युग में आर्थिक स्वावलंबन बढ़ता जाता है वैसे-वैसे व्यक्ति का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्वावलंबन भी बढ़ता जाता है।

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण

आर्थिक स्वावलंबन की महत्ता को समझते हुए आर्थिक स्वावलंबन को एक प्राचल (पैरामीटर) के रूप में अपनाया गया है। कुल आर्थिक स्वावलंबन संबंधी अनुमापन तंत्र की निर्मिति विशिष्ट रूप से की गई है, जिसमें आर्थिक स्वावलंबन के कुल 13 उप प्राचल निर्मित किए गए हैं। यह उप प्राचल आर्थिक स्वावलंबन के स्वरूप को पूरी तरह से दर्शाते हैं। प्रत्येक उप प्राचल को उसकी योग्य उपयोगिता के अनुसार तीन में से अंक (जितना उप प्राचल उच्च उतने ज्यादा अंक) प्रदान किए गए हैं। ऐसे सभी उप प्राचलों से प्राप्त अंकों का सकल कर प्रस्तुत अध्ययन में दीनदयाल शोध संस्थान से लाभान्वित व्यक्तियों की कुल आर्थिक स्वावलंबन के स्तर को जाँचा गया है। साथ ही प्राप्त तथ्यों को सरल ढंग से समझने हेतु माध्य एवं मानक विचलन सांख्यिकीय परीक्षण का प्रयोग भी किया गया है। आरेख कुल आर्थिक स्वावलंबन को दर्शाता है, वहीं सारणी आर्थिक स्वावलंबन के विविध आयामों को दर्शाती है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आरेख : कुल आर्थिक स्वावलंबन

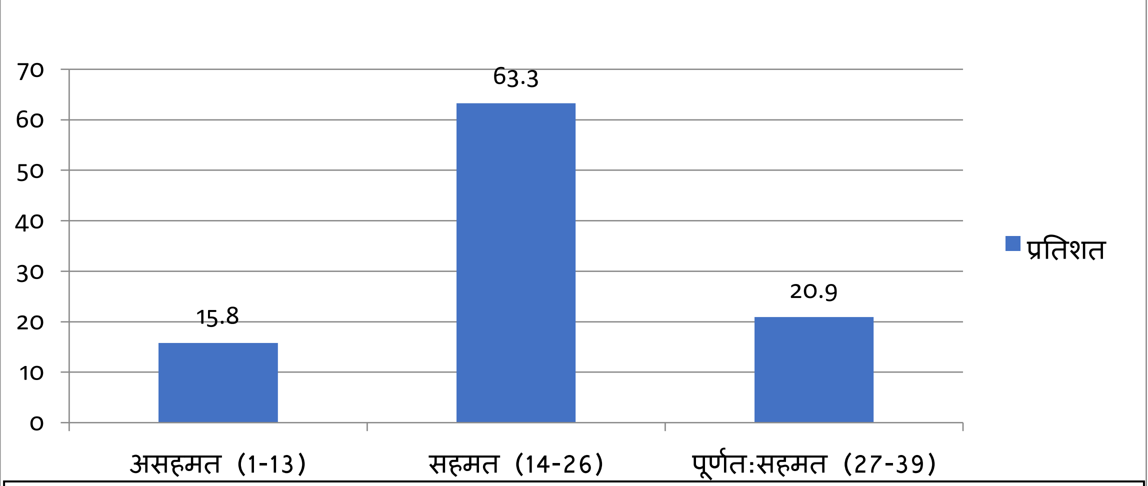

माध्य 24.5004	मानक विचलन 4.73522

प्रस्तुत आरेख में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह सामने आता है कि दीनदयाल शोध संस्थान से संबंधित सर्वाधिक 63.3 प्रतिशत लाभार्थी कुल आर्थिक स्वावलंबन से सहमत हैं। ततपश्चात् 20.9 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 15.8 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक मात्रा में 80 प्रतिशत से अधिक लाभार्थी 3 अंक में से 2 या उससे अधिक अंक दे रहे हैं। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यों से लोग आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने की प्रक्रिया में सक्रिय हैं। दीनदयाल शोध संस्थान से संबंधित लाभार्थियों का कुल आर्थिक स्वावलंबन का माध्य 24.5004 है, जबकि मानक विचलन 4.73522 है। प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि कुल आर्थिक स्वावलंबन औसतन 24.5004 (± 4.73522) अंक है।

उपर्युक्त तथ्यों के परिणामों से यह स्पष्ट हो रहा है कि सर्वाधिक लाभार्थी कुल आर्थिक स्वावलंबन को मध्यम स्तर का मानते हैं। वहीं एक तिहाई मानने वालों में उच्च और निम्न दोनों स्तर की हैं। जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि दीनदयाल शोध संस्थान के विभिन्न कार्यों और प्रयासों से अध्ययन क्षेत्र में मध्यम मात्रा में बदलाव आया है। संबंधित परिणामों के सांख्यिकीय परिक्षण से स्पष्ट होता है कि कुल आर्थिक स्वावलंबन औसतन 24.5004 (± 4.73522) है, जो यह दर्शाता है कि 39 अंको में से औसतन 24 अंक प्राप्त हो रहे है। प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि 1 से 13 अंक निम्न स्तर को, जबकि 14 से 26 अंक मध्यम स्तर को, वहीं 26 से 39 अंक उच्च स्तर को दर्शाते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए जो कार्य किए गए हैं, उन्हें औसतन 24 अंक प्राप्त हो रहे हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि मध्यम स्थिति को प्राप्त करने के करीब हैं। लेकिन जो लक्ष्य संस्थान प्राप्त करना

चाहता है या पूर्ण रूप से आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त करने का जो पैमाना है, उस ओर संस्थान अग्रसर है, लेकिन अभी रास्ता दूर है।

सारणी : आर्थिक स्वावलंबन के विविध आयाम

अ.	वक्तव्य	कोई प्रतिक्रिया नहीं	असहमत एवं निम्न स्तर	सहमत एवं मध्यम स्तर	पूर्णत: सहमत एवं उच्च स्तर	कुल
1.	संस्थान के हस्तक्षेप से परिवार को घर खर्च चलने में आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है	0.8	8.3	65.8	25.0	100
2.	संस्थान के हस्तक्षेप से गरीबी में कमी आयी है।	0.0	10.0	70.0	20.0	100
3.	संस्थान के हस्तक्षेप से बेरोजगारी में कमी आयी है।	1.7	32.5	51.7	14.2	100
4.	संस्थान के हस्तक्षेप से स्वरोजगार स्थापित करने में स्वावलंबन प्राप्त हुआ है।	2.5	33.3	53.3	10.8	100
5.	संस्थान के हस्तक्षेप से पीने हेतु पानी एवं जल प्रबंधन में सुधार हुआ है।	0.8	1.7	66.7	30.8	100
6.	संस्थान के हस्तक्षेप से स्वरोजगार स्थापित करने के पश्चात् आमदनी में वृद्धि हुई है।	0.0	19.2	60.0	20.8	100
7.	संस्थान के हस्तक्षेप से परिवार की आमदनी में वृद्धि हुई है।	0. 0	11.7	71.7	16.7	100
8.	संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि कार्यों के प्रति विश्वास में वृद्धि हुई है।	0.0	2.5	60.8	36.7	100
9.	संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि आमदनी में वृद्धि हुई है।	0.0	5.8	77.5	16.7	100
10.	संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि भूमि अधिक उपजाऊ हुई है।	0.8	10.0	70.8	18.3	100
11.	संस्थान के हस्तक्षेप से किसान बिना अतिरिक्त खर्च किए बिना कृषि के उत्पादन में वृद्धि हुई है।	0.8	48.3	40.8	18.3	100
12.	संस्थान के हस्तक्षेप से बीज प्रबंधन एवं संकलित करने में वृद्धि हुई है।	0.0	5.0	61.7	33.3	100
13.	संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि क्षेत्र की असमर्थताओं को दूर करने में आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है।	0.0	12.5	69.2	18.3	100

सारणी के पहले पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से परिवार को घर खर्च चलाने में आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह सामने आता है कि सर्वाधिक 65.8 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 25.8 प्रतिशत पूर्णत: समहत हैं, जबकि इनके विपरीत 8.3 प्रतिशत लाभार्थी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

असहमत हैं, वहीं शेष 0.8 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। प्राप्त परिमाणों से साफ होता है कि घर खर्च चलाने में लोग आत्मनिर्भर बने हैं। साथ ही यह साफ होता है कि यह पहलू मजबूत स्थिति की ओर अग्रसर है। प्राप्त तथ्यों के परिक्षण के उपरांत कहा जा सकता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आर्थिक स्वावलंबन हेतु किए जा रहे कार्य बदलाव ला रहे हैं।

सारणी के दूसरे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से गरीबी में कमी आयी है" में प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 70.0 प्रतिशत लाभार्थी यह मानते हैं कि गरीबी में कमी आयी है। ततपश्चात् 20.0 प्रतिशत मानते हैं कि पूरी तरह से कमी आयी है, जबकि 10.0 प्रतिशत का मानना है कि गरीबी में कोई कमी नहीं आयी है। उपर्युक्त आंकड़ों के परिणाम साफ विदित करते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से लाभार्थियों की गरीबी में कमी आयी है। साथ ही इस पहलू के परिणाम मजबूती की ओर अग्रसर हैं, ऐसा प्रतीत होता है।

सारणी के तीसरे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से बेरोजगारी में कमी आयी है" में प्राप्त हुए तथ्यों के अनुसार सामने आता है कि 51.7 प्रतिशत लाभार्थी यह मानते हैं कि बेरोजगारी में कमी आयी है। जबकि इसके विपरीत 32.5 प्रतिशत का मानना है कि कोई कमी नहीं आयी है। साथ ही 14.2 प्रतिशत यह मानते हैं कि बेरोजगारी पूरी तरह से खत्म हो गई है, वहीं शेष 1.7 प्रतिशत लाभार्थियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। यह परिणाम साफ दर्शाते हैं कि बेरोजगारी की दर में कमी आयी है लेकिन पूरी तरह से बेरोजगारी अभी खत्म नहीं हुई है। एक तिहाई लाभार्थी अभी ऐसे हैं जिनका मानना है कि बेरोजगारी अभी भी विद्यमान है। दीनदयाल शोध संस्थान के प्रयासों को बेरोजगारी समाप्त करने जो योगदान रहा है, उसे हम मध्यम स्थिति में रख सकते हैं।

सारणी के चौथे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से स्वरोजगार स्थापित करने में स्वावलंबन प्राप्त हुआ है" में प्राप्त तथ्यों से यह सामने आता है कि 53.3 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से समहत हैं। वहीं इसके विपरीत 33.3 प्रतिशत इस पहलू से असहमत हैं, जबकि 10.8 प्रतिशत इससे पूर्णत: सहमत हैं, वहीं शेष 2.5 प्रतिशत लाभार्थियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। प्राप्त परिणामों के आधार पर निकल कर आता है कि दीनदयाल शोध संस्थान के विभिन्न कार्यों के बदौलत लाभार्थी स्वरोजगार स्थापित करने में स्वावलंबी बने हैं। साथ ही प्रस्तुत परिणाम यह भी साफ विदित करते हैं कि इस पहलू में बदलाव आया है लेकिन अभी पूरी तरह से मजबूत स्थिति में नहीं पहुँच पाया है।

सारणी के पाँचवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से पीने हेतु पानी एवं जल प्रबंधन में सुधार हुआ है" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 66.7 प्रतिशत लाभार्थी यह मानते हैं कि पेय जल एवं जल प्रबंध में सुधार आया है, वहीं 38.8 प्रतिशत यह मानते हैं कि पूर्णत: सुधार आया है, जबकि 1.7 प्रतिशत का मानना

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है कि कोई सुधार आया है तथा शेष 0.8 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से पेय जल एवं जल प्रबंधन में सुधार आया है। साथ ही इस पहलू के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि यह मजबूत हुआ है।

सारणी के छठे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से स्वरोजगार स्थापित करने के पश्चात् आमदनी में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 60.0 प्रतिशत लाभार्थियों का मानना है कि आमदनी में वृद्धि हुई है, जबकि 20.8 प्रतिशत मानते हैं कि पूर्णत: वृद्धि हुई है, वहीं इसके विपरीत 19.2 प्रतिशत का मानना है कि आमदनी में कोई वृद्धि नहीं हुई है। प्राप्त तथ्यों के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से स्वरोजगार स्थापित करने के पश्चात् आमदनी में वृद्धि हुई है। साथ ही यह पहलू मजबूती की ओर अग्रसर दिख रहा है।

सारणी के सातवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से परिवार की आमदनी में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से सामने आता है कि सर्वाधिक 71.7 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 16.7 प्रतिशत इससे पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 11.7 प्रतिशत लाभार्थी इससे असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के परिणामों के आधार पर स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान से लाभान्वित परिवारों की स्थिति में बदलाव आया है। साथी ही यह पहलू भी मजबूत स्थिति की ओर अग्रसर है।

सारणी के आठवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि कार्यों के प्रति विश्वास में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अनुसार सामने आता है कि 60.8 प्रतिशत लाभार्थी यह मानते हैं कि कृषि कार्यों के प्रति विश्वास में वृद्धि हुई है। जबकि 36.7 प्रतिशत इससे पूर्णत: वृद्धि हुई है। वहीं 2.5 प्रतिशत इससे असहमत हैं। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यों से कृषि के प्रति लाभार्थियों में विश्वास बढ़ा है। साथ ही तथ्यों आधार स्पष्ट हो जाता है कि यह पहलू मजबूत हुआ है।

सारणी के नौवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि आमदनी में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से सामने आता है कि सर्वाधिक 77.5 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 16.7 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 5.8 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान कार्यों के कारण कृषि की आमदनी में बदलाव आया है। यह पहलू मजबूती की तरफ अग्रसर दिख रहा है।

सारणी के दसवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि भूमि अधिक उपजाऊ हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह सामने आता है कि सर्वाधिक 70.8 प्रतिशत लाभार्थी यह मानते हैं कि कृषि हेतु अधिक उपजाऊ बनी है। ततपश्चात् 18.3 प्रतिशत इससे पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 10.0 प्रतिशत असहमत हैं। शेष बचे 0.8 प्रतिशत लाभार्थियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की है। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यों से कृषि अधिक उपजाऊ बनी है। यह पहलू मजबूती की ओर सक्रिय दिख रहा है।

सारणी के ग्यारहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से किसान बिना अतिरिक्त खर्च किए बिना कृषि के उत्पादन में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से सामने आता है कि सर्वाधिक 48.3 प्रतिशत लाभार्थी यह मानते है कि कृषि के कार्यों में अब अधिक खर्च करना पड़ता है अर्थात इस पहलू से असहमत हैं। जबकि 40.8 प्रतिशत सहमत हैं, वहीं 18.3 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं। शेष बचे 0.8 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। विदित परिणाम साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा जो कार्य कृषि केतु किए गए हैं, उनके परिणाम स्वरुप कृषि के क्षेत्र में किसानों का खर्च अधिक बढ़ा है। पूर्व तथ्यों के अनुसार कृषि के उत्पादन में वृद्धि हुई है। लेकिन प्रस्तुत पहलू के अनुसार खर्च भी बढ़ा है। साथ ही यहाँ पर साफ स्पष्ट होता है कि उत्पादन तो बढ़ा है लेकिन कृषि के कार्यों में खर्च भी अधिक बढ़ गया है। यह पहलू कमजोर स्थिति में है।

सारणी के बारहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से बीज प्रबंधन एवं संकलित करने में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह सामने आता है कि सर्वाधिक 71.7 प्रतिशत लाभार्थी इससे सहमत हैं, जबकि 33.3 प्रतिशत पूर्णत सहमत हैं, वहीं 5.0 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त परिणाम इस ओर साफ निर्दिष्ट करते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से बीज प्रबंधन एवं संकलित करने में सुधार आया है। साथ ही यह पहलू साफ दर्शाता है कि मजबूत स्थिति की ओर सक्रिय है।

सारणी के तेरहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से कृषि क्षेत्र की असमर्थताओं को दूर करने में आत्मनिर्भरता में प्राप्त हुई है" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 69.2 प्रतिशत लाभार्थी इससे सहमत हैं, जबकि 18.3 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, वहीं 12.5 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त परिणाम इस ओर विदित कर रहे हैं कि कृषि के क्षेत्र में व्याप्त असमर्थताएँ दूर हुई हैं। यह पहलू मजबूती की तरफ अग्रसर दिख रहा है।

शोध प्रश्न का उत्तर

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर के लिए आर्थिक स्वावलंबन से संबंधित प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण का सामान्यीकरण किया गया तो प्राप्त तथ्यों के उत्तर से यह स्पष्ट होता है कि लाभार्थी मध्यम स्तर के आर्थिक स्वावलंबन को प्राप्त करने की तरफ बढ़ रहे हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के आर्थिक स्वावलंबन संबंधी प्रयासों की बात करें तो यह विदित होता है कि चित्रकूट प्रकल्प के अंतर्गत आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु संस्थान विविध प्रकार के स्वरोजगारोन्मुख कार्यक्रमों को संचालित कर विविध प्रयास कर रहा है। अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र कृषि पर अधिकाधिक निर्भर होने के कारण संस्थान द्वारा कृषि के विकास हेतु विविध प्रकार के प्रयोग किए गए हैं जिससे कृषि क्षेत्र का विकास विकास हो सके। इस प्रकार प्रस्तुत प्रश्न का यह निष्कर्ष विदित होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान के तत्वाधान में आर्थिक रूप से स्वावलंबी एवं सशक्त

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बनाने हेतु किए गए कार्यों के परिणामस्वरूप अध्ययन क्षेत्र में लाभार्थी आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने की ओर अग्रसर हैं।

निष्कर्ष :

दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आर्थिक रूप से लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं जिससे लोग स्वावलंबी बनने की प्रक्रिया में अग्रसर हैं। संस्थान से जुड़ने के पश्चात् लोगों में पारिवारिक खर्च चलाने के प्रति पहले के अपेक्षा आत्मनिर्भरता बढ़ी है। स्वरोजगार के माध्यम से लोग स्वावलंबी बनने की प्रक्रिया में आगे बढ़े हैं। संस्थान द्वारा कृषि कार्यों में सुधार हेतु विभिन्न प्रयास किए गए हैं । जैसे- परती भूमि को कृषि हेतु उपयोग में लाना, कृषि भूमि को अधिक उपजाऊ बनाना, कृषि से संबंधित विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण, बीज प्रबंधन एवं संकलित करना, सिंचाई हेतु सुविधाएं, जल प्रबंधन को बढ़ावा देना, कृषि के क्षेत्र में व्याप्त असमर्थताओं को दूर करने हेतु लोगों को स्वयं से आत्मनिर्भर बनाना आदि है। इसके अलावा अध्ययन से कृषि के प्रति नकारात्मक पहलू भी सामने आता हैं। जैसे- कृषि कार्यों में पहले के अपेक्षा लागत में वृद्धि तथा कृषि संबंधी कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भरता है। उक्त आंकड़ों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कृषि के क्षेत्र में बहुत से सकारत्मक सुधार आए हैं जिससे लोग स्वावलंबन प्राप्त करने की ओर बढ़ रहे हैं। साथ ही साथ कुछ समस्याएँ भी बढ़ी हैं जिनसे निजात दिलाने में संस्थान असफल रहा है। संस्थान से संबंधित लाभार्थियों के आमदनी के अध्ययन से यह निकल कर आता है कि पहले की अपेक्षा आमदनी में वृद्धि हुई है, लेकिन आवश्यकताएँ भी बड़ी तेजी के साथ बढ़ी है। इस तरह से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यों के परिणाम स्वरुप लोग आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने की ओर बढ़ रहे हैं परंतु अभी पूर्णत: स्वावलंबी बनने का रास्ता दूर है। संस्थान ने आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के प्रयास तो बहुत अधिक किए हैं, जिसके लिए संस्थान ने चित्रकूट परिधि में भारत सरकार से आवंटित दो कृषि विज्ञान केंद्र, मानव संस्थान विकास मंत्रालय के सहयोग से 'जन शिक्षण संस्थान', उद्यमिता विद्यापीठ, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI) एवं विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अनेकों प्रयास किए हैं। संस्थान ने उद्यमिता विद्यापीठ के अंतर्गत 19 से अधिक केंद्र बनाकर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध कराई है, जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् स्वरोजगार स्थापित करना अनिवार्य है। इन कार्यों के लिए संस्थान आर्थिक तथा अन्य प्रकार के सहयोग भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त 'जन शिक्षण संस्थान' के माध्यम से संस्थान गाँव-गाँव पहुँचकर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान करता है जैसे- सिलाई, मोमबत्ती, साबुन, सर्फ, बुनाई, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ तथा उस क्षेत्र में पाए जाने वाले कच्चे पदार्थों से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करता है। इन सबके अतिरिक्त संस्थान ने आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के अनेकों प्रयत्न किए हैं, लेकिन इसमें पूर्णत: सफलता अभी नहीं प्राप्त हुई है। जिसके

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कुछ प्रमुख कारण भी स्पष्ट हुए है जैसे- प्रशिक्षण के बाद स्वरोजगार स्थापित करने एवं करने के पश्चात् विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही साथ अध्ययन क्षेत्र की परिस्थितियाँ ऐसी है, जिनके कारण विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे- आर्थिक रूप से बहुत पिछड़ा होना, लगातार सूखा पड़ना, औद्योगिक क्षेत्र का शून्य होना और प्रशासन स्तर पर कोई कारगर कदम न उठाए जाना आदि विभिन्न पहलू हैं।

संदर्भ सूची

गाँधी, महात्मा. (2015). ग्राम-स्वराज्य. अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन.

चौहान, गौरव. (2015). नानाजी देशमुख जीवन दर्शन. नई दिल्ली : अमरसत्य प्रकाशन.

दीनदयाल शोध संस्थान. (2014). विराट पुरूष: नानाजी देशमुख वांग्मय(छ खंडो में). नई-दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

देशमुख, नानाजी. (2011). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ. नई- दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

कुमार, राकेश. (2020). भारत रत्न नानाजी देशमुख. नई दिल्ली : डायमंड पॉकेट बुक्स पब्लिकेशन.

ग्रामीण विकास मंत्रालय. (ND). नानाजी देशमुख: सर्वांगीण ग्रामीण विकास के प्रति समर्पित एक जीवन. नई दिल्ली ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

दीनदयाल शोध संस्थान. (ND). नानाजी की पाती युवाओं के नाम (पत्र- संकलन). नई-दिल्ली : दीनदयाल शोध संस्थान.

दीनदयाल शोध संस्थान. (ND). स्वावलंबन अभियान चित्रकूट. नई- दिल्ली : दीनदयाल शोध संस्थान.

नामदेव, डॉ. महेंद्र कुमार. (2020). ग्रामीण विकास का चित्रकूट मॉडल : नानाजी देशमुख प्रणीत. नई- दिल्ली : नेशन प्रेस.

सिंह, धीरज. (2009). दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गाँधी जी के शैक्षिक विचारों के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन. (पीएचडी शोध प्रबंध). डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय : फैजाबाद.

Dash, B. & Kumar M. (2021). NANAJI DESHMUKH: An Epitome of Indian Social Work. New Delhi: Concept publishing Company Pvt. Ltd.

www.chitrakoot.org/driindia/home/html

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies